श्री शांतिनाथ 108 नाम मंत्र विधान मण्डल

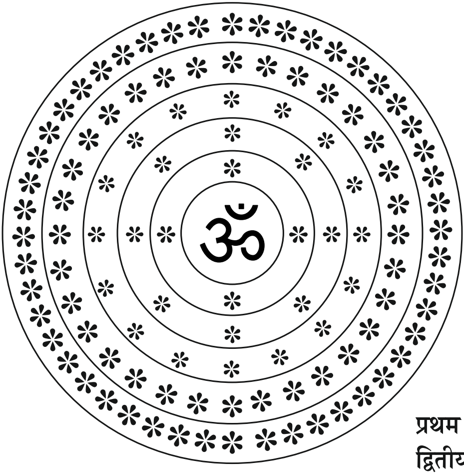

प्रथम वलय - 4
द्वितीय वलय - 8
तृतीय वलय - 16
चतुर्थ वलय - 32
पंचम वलय - 48
कुल- 108 अर्घ्य

रचयिता :
प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागर जी

कृति : **श्री शांतिनाथ 108 नाम मंत्र विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुर्ण्याजक :
विशद वात्सल्य भवन के उद्घाटन के उपलक्ष्य में
पंकज कुमार पाण्ड्या, मधु जैन,
अंकित-रुचिका, सौरभ-ज्योति
हितांशी, वर्धित, वाग्मी, हितांश पाण्ड्या परिवार
सिद्धार्थ नगर, जयपुर (राज.) मो.: 9828027256

कृति	:	**श्री शांतिनाथ 108 नाम मंत्र विधान**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम, 2026
प्रतियाँ	:	1000
संकलन	:	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879 3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308 4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971 5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

श्री नरेशकुमारजी, श्रीमती विमलादेवीजी, श्री विकासजी-निशाजी अविश्काजी, नैवेद्याजी, नीतूजी, प्रीतिजी-विमलजी, श्वेताजी-नवनीतजी अंकितजी-विनिताजी, अमितजी-श्वेताजी, अन्विकाजी, विरांशजी, हितार्थजी एवं समस्त वैद परिवार (चैनपुरा), जैन विहार, कंवर का बाग, सांगानेर, जयपुर (राज.)

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ाहारी लोक में ,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं,अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई ,णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि) (यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले ,पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह विराजित सर्व तीर्थंकर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहृसनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

***दोहा*– जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत,पंच विदेह स्थित सर्व जिनेश्वर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाईद्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शांतिनाथ स्तवन

दोहाः शांतिनाथ जिनराज हैं, परम शांति दातार ।
अर्चा करते भाव से, मिटे भ्रमण संसार ।।

(चामर छन्द)

श्री जिनेन्द्र वीतराग, शांति के सुनाथ हैं ।
देव इंद्र नर मुनीन्द्र, पद झुकाएँ माथ हैं ।।
हे जिनेन्द्र देव! आप, श्रेष्ठ धर्म धाम हो ।
राग द्वेष हीन आप, के चरण प्रणाम है ।।1।।
श्री जिनेन्द्र शांतिनाथ, लोक में महान हैं ।
श्री जिनेन्द्र शांतिनाथ, शांति के निधान हैं।।
तीन लोक में महान, शांतिनाथ नाम है ।
श्री जिनेन्द्र शांतिनाथ, आपको प्रणाम है ।।2।।
वीतराग चित् स्वरूप, लोक में जो श्रेष्ठ हैं ।
ऋद्धि सिद्धि युक्त तीर्थ, नाथ आप ज्येष्ठ हैं ।।
शुद्ध बुद्ध आप, चैतन्य के निधान हैं ।
तीन लोक पूज्य आप, विशद ज्ञानवान हैं ।।3।।
शांतिनाथ नाम जाप, सर्व कर्म नाशिया ।
शांतिनाथ ध्यान सर्व, लोक का प्रकाशिया ।।
ॐ ह्रीं शांतिनाथ, सर्व पाप नाशिया ।
ध्यान आप जाप, चैतन्य का प्रकाशिया ।।4।।
हे जिनेन्द्र! पूज्य आप, सर्व कर्म हानियाँ ।
श्री जिनेन्द्र सर्व द्रव्य, सर्व लोक जानियाँ ।।
श्री जिनेन्द्र वीतराग, शांतिनाथ आप हो ।
आप नाम जाप से, नाश सर्व पाप हों ।।5।।

दोहाः परम शांति के कोष हैं, शांतिनाथ भगवान।
ग्रहारिष्ट सब शांत हों, करते हम यशगान।।

श्री शांतिनाथ 108 नाम मंत्र पूजा

"स्थापना"

हे शांति जिनम् !, हे शांति जिनम् !, हे शांति जिनम् ! शांतीकारी।
हे मंगलमय !, हे मंगलमय!, हे मंगलमय ! मंगलकारी ॥
हे ऋद्धि प्रदायक ! सिद्धीप्रद, समृद्धि प्रद वृद्धिकारी ।
हे अष्टोत्तर शत नामाक्षर !, तद्रूप श्रेष्ठ गुण के धारी ॥

दोहा

शांति प्रदायक शांति जिन, शांतिनाथ शुभ नाम।
आओ पधारो मम हृदय, बारम्बार प्रणाम् ॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तर शत नाम धारक सर्व कष्ट निवारक शांतिकारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

विषयों में फँसकर सांसारिक, निज संसार बढ़ाया है ।
वैतरणी से रागद्वेष की, भव से पार न पाया है ॥
शांति सरोवर का जल लेकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं ।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्य विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काषायिक भाव बनाकर के, अपना सर्वस्व लुटाया है।
निज का स्वरूप न जान सके, सदियों से इसे भुलाया है।।
शीतलता पाने निज गुण की, यह गंध चढ़ाने लाए हैं।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ को पाकर के अक्षय निधि, अपनी हमने विसराई है।
अपनों के सपनों में खोकर, चेतन की सुधि न पाई है।।
निज अक्षय पदवी पाने को, अक्षत ये धवल चढ़ाते हैं।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्त्ये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय विषयों की मदिरा पी, हम बने सदा से मतवाले।
तृष्णा की तृप्ती करने को, कई कार्य किए हमने काले।।
अब काम भाव विध्वंस हेतु, ये सुरभित सुमन चढ़ाते हैं।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग की पीड़ा को, भव-भव में सहते आए हैं।
खाये हैं भक्ष्याभक्ष्य सभी, पर तृप्त नहीं हो पाए हैं ।।
तृष्णा की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह तिमिर से मोहित हो, निज का स्वरूप न पहिचाने।
नित राग द्वेष में ग्रसित हुए, अतएव पड़े गोते खाने ।।
अब मोह तिमिर के समन हेतु, यह दीप जलाने आए हैं ।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अशुभ कर्म दुखदायी हैं, हमने अब तक ऐसा माना ।
तज पाप कर्म शुभ पुण्य कर्म, को चाह रहा था अपनाना।।
सब कर्म शुभाशुभ नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं ।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों में लीन रहे हरदम, न योग कभी भी भाये हैं ।
भोगों के फल से चतुर्गति, में सुख दुख हमने पाए हैं ।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, फल विविध चढ़ाने लाए हैं।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग का वैभव पाकर, उसमें ही सदा रमाए हैं ।
जो मोक्ष सुखों के साधक हैं , वे हमें कभी न भाए हैं ।।
अब पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं ।
श्री शांतिनाथ की अर्चा करने, चरण शरण में आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **शांती का दरिया बहे, नाथ! आपके द्वार ।**
अतः आपके चरण में, देते शांती धार ।।

।। शान्तये शांतीधारा ।।

दोहा : **पुष्पों से पुष्पांजलि, देते जग के लोग ।**
पुण्य योग से जीव सब, पाते शुभ संयोग ।।

(इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याण के अर्घ्य

चलो-चलो रे सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, पावें गर्भ कल्याण ।
जिन पूजा करके मिले, शिव पद का सोपान ।।
चलो-चलो रे सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते है कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलो-चलो रे सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, पावें जन्म कल्याण ।
जिन पूजा करके मिले, शिव पद का सोपान ।।
चलो-चलो रे सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलो-चलो रे सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।

तीर्थंकर प्रकृति के धारी, पावें तप कल्याण ।
जिन पूजा करके मिले, शिव पद का सोपान ।।
चलो-चलो रे ! सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलो-चलो रे ! सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, पावें केवल ज्ञान।
जिन पूजा करके मिले, शिव पद का सोपान ।।
चलो-चलो रे ! सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञान मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलो-चलो रे ! सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, पावें मोक्ष कल्याण ।
जिन पूजा करके मिले, शिव पद का सोपान ।।
चलो-चलो रे ! सभी नर नार, प्रभु की पूजा में ।
कटते हैं कर्म अपार, प्रभु की पूजा से ।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा : शांतिकर हे शांति जिन ! तुम हो पूज्य त्रिकाल।
तव गुण की महिमा अगम, गाते हैं जयमाल ।।

(छन्द : तामरस दाम)

जय जय जय जिन शांति नमस्ते, तप्त स्वर्णवत् कांति नमस्ते ।
तीर्थंकर पद प्राप्त नमस्ते, परम पूज्य हे आप्त! नमस्ते ।।1।।
प्राप्त भेद विज्ञान नमस्ते, दायक सम्यक् ज्ञान नमस्ते ।
जीवन चारितवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते ।।2।।
तीन लोक के ईश नमस्ते, जगतीपति जगदीश नमस्ते ।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवल ज्ञान प्रकाश नमस्ते ।।3।।
अविकारी जिनदेव नमस्ते, पूजैं सुर नर देव नमस्ते ।
समवशरण के ताज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते ।।4।।
दिव्य ध्वनि ॐकार नमस्ते, भाषा सर्व प्रकार नमस्ते ।
तीन गति के जीव नमस्ते, सुनते स्वयं सजीव नमस्ते ।।5।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, पावन परम पवित्र नमस्ते ।
चरण शरण में जाय नमस्ते, पावें स्वयं हिताय नमस्ते ।।6।।
तीर्थराज पे जाय नमस्ते, निज आतम को ध्याय नमस्ते ।
योग रोध जिनदेव नमस्ते, निज को ध्याएँ सदैव नमस्ते ।।7।।

सर्व कर्म को नाश नमस्ते, निज को ध्याएँ सदैव नमस्ते ।
पाएँ सौख्य अनंत नमस्ते, शांतिनाथ भगवंत नमस्ते ।।8।।
जिन पूजा कर जीव नमस्ते, पुण्य जगाएँ अतीव नमस्ते ।
पाकर निज स्वरूप नमस्ते, हो जाते शिव रूप नमस्ते ।।9।।

दोहाः **शांति कांति दातार हैं, शांतिनाथ भगवान।**
शिव सुख पाने हेतु हम, करते हैं यशगान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्व दुःख निवारक अष्ट शत (108) नाम मंत्र धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहाः **पुष्पांजलि करते चरण, सुख शांती के हेत।**
'विशद' भाव से पूजते, श्रद्धा भक्ति समेत।।

(इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत)

***

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं ।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में, भाव बनाये हैं ।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं ।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं ।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागर जी
यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सौ आठ नाम मंत्र शांति विधान अर्घ्यावली

सोरठा - पुष्पाञ्जलि हे नाथ !, करते हैं हम भाव से।

चरण झुकाते माथ, वन्दन करते जिन चरण ।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

''दोहा''

''सर्व सिद्धिदायक'' रहे, शांतिनाथ भगवान ।

अर्घा करते भाव से, पाने शिव सोपान ।। 1 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व सिद्धिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''दुःख निवारक'' लोक में, सौख्य प्रदायक देव।

सुर-नर-मुनि अर्चा करें, जिनकी अतः सदैव।। 2 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व दुःख निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ''दारिद्र निवारते'' करते शांति प्रदान ।

अतः कहाए लोक में, शांतिनाथ भगवान ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व दुःख दारिद्र निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे ''चमत्कारिक'' महा, परम शांति दातार ।

अतः पूजते जिन चरण, नत हो बारम्बार ।। 4 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चमत्कारिक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः प्रथम वलय सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.।

चौंतीस अतिशय से सहित, रहे शांति जिनराज ।
''अतिशयकारी'' जो रहे, चरण पूजते आज ।। 5 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अतिशयकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विघ्न हरण'' शांति करण, रहा आपका नाम ।
पूजे रहे त्रय योग से, करके चरण प्रणाम ।। 6 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं विघ्नहरण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कल्पतरू' सम आप हो, कल्पतरू हे नाथ! ।
इच्छित फल दो भक्त को, चरण झुकाए माथ ।। 7 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कल्पतरू श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''ऋद्धि सिद्धि दायक'' प्रभो !, तुम हो कृपा निधान।
ऋद्धि सिद्धि पाने प्रभू, करते हम गुणगान ।। 8 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं ऋद्धि सिद्धि दायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे ''मनोहारी'' प्रभू, मनहर आप जिनेश ।
अर्चा करते आपकी, भाव से यहाँ विशेष ।। 9 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं मनोहारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ''चक्र नायक'' प्रभो!, कामदेव तीर्थेश ।
भक्ती करके आपकी, नाशें कर्म अशेष ।। 10 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं च्रक नायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कामदेव'' पद पाए जो, पाए सुभग शरीर ।
लोक विजय की आपने, होते नहीं अधीर ।। 11 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कामदेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ''चक्रधारी'' हुए, चक्रवषर्ति पद पाय ।
कर्म घातिया नाशकर, हो गए आप जिनाय ।। 12 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चक्रधारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय नमः द्वितीय वलय सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''परमोपकारी'' आप हो, करते जग उपकार ।
अतः पूजते जगज्जन, नत हो बारम्बार ।। 13 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परमोपकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए ''कर्महन्ता'' प्रभू, करके कर्म विनाश ।
मोक्ष मार्ग पर जो बढ़े, पाए शिवपुर वास ।। 14 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कर्म हन्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'' श्री कारक'' श्री के धनी, श्री कर हो भगवान।
पूजा करते आपकी, करो मेरा कल्याण ।। 15 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री कारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''लक्ष्मनीरायण'' रहे, शांतिनाथ तीर्थेश ।
जिन पद पूजें जीव जो, पावें श्री विशेष ।। 16 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं लक्ष्मीनारायण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के भी देव जो, कहे ''महादेव'' आप ।
नाम जापकर आपका, कट जाते हैं पाप ।। 17 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महादेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सिद्धि विनायक'' लोक में, गाये शांति जिनेश।
जिनकी अर्चा से सभी, नश जाते हैं क्लेश ।। 18 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सिद्धि विनायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मनोकामना पूर्ण'' हैं, जग में शांती नाथ ।
पूर्ण होय मम कामना, झुका रहे पद माथ ।। 19 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं मनोकामनापूर्ण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''इष्ट'' सभी के हैं प्रभु, इष्टदेव है नाम ।
इष्ट मनोरथ पूर्ण हों, करते चरण प्रणाम ।। 20 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं इष्ट देव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सर्वोत्कृष्ट'' गाये प्रभु, जगती पति जगदीश ।
ऋद्धि सिद्धि पाने विशद, झुका रहे पद शीश ।। 21 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्वोत्कृष्ट श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मंगलकारी'' लोक में, दायक मंगलकार ।
शिव पद दायक हे प्रभो !, करो जगत उद्धार ।। 22 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम मंगलकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''चौपाई''

आत्म हंस कहलाए स्वामी, शांतिनाथ जिन अन्तर्यामी ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 23 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आत्म हंस श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''परम हंस'' जिनवर कहलाए, भेद विज्ञान प्रभू प्रगटाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 24।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम हंस श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'रोग हन्ता'' अविकारी, रहे जगत में मंगलकारी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 25।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं रोग हन्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ''शोक हन्ता'' जिन देवा, करते सुर नर जिनकी सेवा।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 26।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं शोक हन्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''भय हंता'' हे भय विनिवारी, जग जीवों के करुणाकारी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 27।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं भय हन्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''दुखहंता'' हे दुःख निवारी !, तीन लोक में करुणाकारी ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 28 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं दुःख हंता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः तृतीय वलय सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.।

''अविनश्वर'' जिनदेव कहाए, जो शाश्वत शिव पदवी पाए ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 29 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अविनश्वर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ''बुद्धि दायक'' जिन स्वामी, हुए परम मुक्ती पथगामी ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 30 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं बुद्धि दायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ''कामना पूर्ण'' कहाए, तव चरणों हम भक्ति जगाए ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 31 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कामना पूर्ण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''तारण तरण'' कहे जग नामी, तीन में लोक में अन्तर्यामी ।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें ।। 32 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं तारण तरण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुखहारी ''सुख कारक'' गाए, अतः आप जग पूज्य कहाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 33।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सुख कारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महामृत्युंजय'' तुम हो स्वामी, तव चरणों हम करें नमामी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 34।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महामृत्युंजय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनदेव ''स्वयं भू'' गाए, निज में केवल ज्ञान जगाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 35।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं स्वयं भू श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ''पाप नाशक'' जिन स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 36।।

ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं पाप नाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

''करुणा मूर्ति'' आप कहलाए, करुणा की शुभ धार बहाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 37।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं करुणा मूर्ति श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे ''पाप भंजक'' अविकारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 38।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं पाप भंजक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ''परम आराध्य'' कहाए, जग में परम पूज्यता पाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 39।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम आराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सर्वदर्शि'' हे नाम के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 40।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व दर्शि श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''प्रातः स्मरणीय'' निराले, जग का कल्मष हरने वाले।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 41।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं प्रात: स्मरणीय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विश्व वंदनीय'' ज्ञान प्रकाशी, बने आप शिवपुर के वासी।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 42।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं विश्व वंदनीय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ''अरिष्ट निवारक'' गाए, तुम जग में निर्दोष कहाए।
भाव सहित जिन महिमा गायें, शांतिनाथ पद पूज रचायें।। 43।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अरिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मोतियादाम छन्द''

कहाए ''क्षमा मूर्ति'' जिनराज, पूजते श्री जिन पद हम आज।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 44।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं क्षमा मूर्ति श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे ''कल्याणकारी'' जिनदेव, पूजते जिन पद सभी सदैव।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 45।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कल्याणकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ''दया मूर्ति'' भगवान, करें सुर नर जिन का गुणगान।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार ।। 46 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं दया मूर्ति श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू ''संकट मोचन'' हो आप, कटें तव नाम जाप से पाप।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार ।। 47 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं संकट मोचन श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ''आत्मदर्शि भगवान'', होय जिन अर्चा कर कल्याण।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार ।। 48 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आत्म दर्शि भगवान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे ''विद्यादायक'' जिनदेव, पूजते सुर नर चरण सदैव।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार ।। 49 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं विद्यादायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मोक्ष दायक'' हैं आप महान, करो मेरा भी प्रभु कल्याण।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 50॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं मोक्ष दायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो ''केवल योगी'' नाथ !, हमें दो मुक्ती पथ में साथ।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 51॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं केवल योगी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अलौकिक'' हो त्रैलोकी नाथ, झुकाते तव चरणों में माथ।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 52॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अलौकिक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो ''नित्यानंद'' जिनेश, सौख्य कर्त्ता हो आप विशेष।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 53॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नित्यानंद श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ''परमानंद'' ऋशीष, झुकाते तब चरणों में शीश।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 54॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परमानंद श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो ''अतिशय रूपानाथ'', जोड़ते तव चरणों में हाथ।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 55॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अतिशय रूपानाथ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ''स्व स्वरूपी'' महिमावान, करें हम भाव सहित गुणगान।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 56॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं स्वस्वरूपी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अनंत बलि'' हैं पावन जिनराज, भक्ति कर होवें पूरे काज।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 57॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अनंत बलि श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शांतिकारक'' हो आप महान, लोक में प्रभु हैं सर्व प्रधान।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 58॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं शांतिकारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो ''वास्तु निवारक'' आप, करें हम नाम मंत्र का जाप
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 59॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं वास्तु निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए प्रभु ''सर्व ग्रहारिष्ट निवार'', गये जो भव सिन्धू के पार।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 60।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व ग्रहारिष्ट निवार श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चतुर्थ वलय सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.।

कहाए ''कालजयी'' भगवान, करे जग श्री जिन का यशगान।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 61।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कालजयी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हैं ''परम सिद्ध'' ऋषिराज, भक्ति कर बनते बिगड़े काज।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 62।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम सिद्ध श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ''आधि व्याधि नाश'' कर देव, करें हम आप चरण की सेव।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार।। 63।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आधि व्याधि नाश श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''धर्म चक्र नायक'' हे तीर्थेश!, लोक में हो तुम पूज्य विशेष।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 64॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं धर्म चक्र नायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ''कल्याण मंदिर'' अर्हंत, किए जो सर्व कर्म का अंत।
शांति जिन परम शांति दातार, पूजते जिन पद बारम्बार॥ 65॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कल्याण मंदिर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''चाल छन्द''

प्रभु परम ''इष्ट'' कहलाए, जो शिव पदवी को पाए।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥ 66॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम इष्ट श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सर्व ''अमंगलहारी'' हैं जग में मंगलकारी।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥ 67॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अमंगलहारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं ''आत्म योगी'' जिन स्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥ 68॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आत्म योगी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ''कल्याणकारी'' जिन गाए, हम जिन अर्चा को आए।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 69 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कल्याणकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु परम ''विष्णु'' कहलाए, जो जगत पूज्यता पाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 70 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं विष्णु श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ''कामधेनु'' जग नामी, तुम हो मुक्ती पथगामी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 71 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कामधेनु श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''चिन्तामणि'' आप कहाए, चिंतित फल आप दिलाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 72 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चिन्तामणि श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ''चित् चैतन्य'' कहाए, जो चित् स्वरूप को पाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 73 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चित् चैतन्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कर्म योगी'' कर्म के धारी, जो हुए पूर्ण अविकारी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 74 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कर्म योगी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"दिव्य शक्ती" आप जगाए, जो परम दिव्यता पाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 75 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं दिव्य शक्ति श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मंशा पूरण'' जिन गाए, जो पूर्ण मुराद कराए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 76 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं मंशा पूरण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सर्व शक्तिमान'' को ध्याएँ, निज आतम शक्ति जगाएँ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 77 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व शक्तिमान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ''अचिन्त्यकारी'' जिन स्वामी !, हम चरणों करें नमामी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 78 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अचिन्त्यकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महापरमेश्वर'' जग जेता, जिनराज हैं कर्म विजेता ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 79 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महापरमेश्वर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ''आत्म बली'' कहलाए, जो आतम बल प्रगटाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 80 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आत्म बली श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मनोबली'' हैं मन के जेता, जिन गाए कर्म विजेता ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 81 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं मनोबली श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वचोबली'' वचन बलधारी, इस जग के करुणाकारी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 82 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं वचोबली श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू ''कायबली'' निज ध्यानी, हैं जग जन के कल्याणी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 83 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं कायबली श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''तपोबली'' सुतप को धारे, जो संयम रत्न सम्हारे।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 84 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं तपोबली श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ''चिदानंद'' कहलाए, चैतन्य स्वरूप जगाए ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 85 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चिदानंद श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''पुण्य धी'' स्वामी, जो पाए पुण्य अकामी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 86 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं पुण्य धी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं ''अनंत सौख्य'' के धारी, कहलाए शिव भर्त्तारी ।
श्री शांतिनाथ को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ।। 87 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अनंत सौख्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पद्धड़ि छन्द''

प्रभु ''विश्व विधाता'' नाम पाय, जग जीवों को दीन्हे सहाय।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 88॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं विश्व विधाता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''सर्व दाता'' जिनेश, इस जग में हो जिनवर विशेष।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 89॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्व दाता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''स्थिर बुद्धि'' कहलाए आप, जिन नाम जाप से कटे पाप।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 90॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं स्थिर बुद्धि श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ''सर्वांग भूषण'' महान, जिनका जग करता यशोगान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 91॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सर्वांग भूषण श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महाप्रज्ञ'' आपका रहा नाम, जग करता तब चरणों प्रणाम।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम।। 92।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महाप्रज्ञ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभुजी ''महाधीर'', जग जन की मैटें आप पीर।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम।। 93।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महाधीर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''बुद्धि दायक'' जिनेश, जग जन को बुद्धी दें विशेष।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम।। 94।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं बुद्धि दायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम ''सुमतिदायक'' महान, जो सुमति करें जग को प्रदान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम।। 95।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सुमतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज ''श्रेयकारक'' विशेष, हितकारक हैं जग में अशेष।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम।। 96।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रेयकारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शत्रुहंता'' तुम जगत् प्रधान, किए तुम कर्म शत्रु की हान ।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम ।। 97 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं शत्रुहंता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महानायक'' शिवदायक दयाल, तुम नाश किए प्रभु कर्म जाल।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम ।। 98 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महानायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ''सुगति मान'' तीर्थेश आप, तव अर्चा करके कटें पाप ।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम ।। 99 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सुगति मान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए जिनेश्वर ''परम पूत'', जिन भक्ति से नशते कर्म भूत ।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम ।। 100 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम पूत श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महा विज्ञ'' हो आप ब्रह्म स्वरूप, तुमने पाया निज का स्वरूप।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम ।। 101 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महा विज्ञ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''परम ब्रह्म'' आपका रहा नाम, तव भक्ती से सब बनें काम।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 102॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम ब्रह्म श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''स्वयंप्रभू'' ज्ञानवान, तुम प्रकट किए केवल्य ज्ञान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 103॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं स्वयं प्रभू श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ''जगन्नाथ'' जग के सुनाथ, तव चरण झुकाएँ भक्त माथ।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 104॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जगन्नाथ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पुण्यात्मा'' तुम हो पुण्यवान, हे नाथ ! पुण्य के हो निधान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 105॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं पुण्यात्मा श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ''परम बोधि'' हो बोधिवान, जग को बोधी करते प्रदान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 106॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं परम बोधि श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''आत्म भू'' जग प्रधान, निज आतम का जो करें ध्यान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 107॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं आत्म भू श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महाकीर्ति'' के जिनवर निधान, महिमा छाई जग में प्रधान।
करो शांतिनाथ शांती प्रदान, हम चरणों में करते प्रणाम॥ 108॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं महाकीर्ति श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पंचम वलय सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.।

''पूर्णार्घ्य''

शांतिनाथ जिन शांति प्रदायक, तीन लोक में हुए महान।
विशद ज्ञान के धारी अनुपम, कहे गये जो महिमावान॥
सुख शांती आनंद प्रदायक, रहे लोक में मंगलकार।
तीन योग से अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अनंत शक्ति संपन्न सर्व दुःख निवारक 108 नाम मंत्रधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रायं नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा : शांतिनाथ के एक सौ, रहे आठ शुभ नाम ।
जयमाला गाते यहाँ, करके चरण प्रणाम ।।

तर्ज : मात-पित गुरू प्रभु चरणों में, प्रणमत...

जयति जय तीर्थंकर भगवान, जयति जय शांतिनाथ भगवान।
भव्य जीव जिनकी अर्चा कर, करते निज कल्याण ।
जयति जय तीर्थंकर भगवान, जयति जय शांतिनाथ भगवान ।। टेक ।।

स्वर्ग लोक से चयकर आते, देव गर्भ कल्याण मनाते ।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।
इंद्र रत्नवृष्टि करते हैं, पा आनंद महान ।
जयति जय तीर्थंकर भगवान, जयति-जय शांतिनाथ भगवान।।
जयति जय... ।। 1 ।।

जन्म कल्याणक देव मनाते, पाण्डुक शिला पे हवन कराते ।
इन्द्र सुरेन्द्र स्वर्ग से आते, भक्ति भाव से महिमा गाते ।
जय जयकार करें खुश होकर, करें विशद गुणगान ।
जयति जय... ।। 2 ।।

दीक्षा धारण करते स्वामी, तप धारण करते जगनामी ।
बनते हैं जो शिवपथ गामी, देव करें चरणों प्रणमामी ।
पंच महाव्रत धारण करके, करते आतम ध्यान ।
जयति जय... ।। 3 ।।

कर्म घातिया आप नशाएँ, अनंत चतुष्टय तब प्रगटाएँ।
समवशरण तव देव बनाएँ, सुर-नर जय-जयकार लगाएँ।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, पाएँ केवल ज्ञान ।
जयति जय... ॥ 4 ॥

दिव्य देशना आप सुनाते, जग-जन को सन्मार्ग दिखाते।
सर्व कर्म के होके नाशी, होते हैं शिवपुर के वासी ।
सुख अनंत के वासी होते, पाके पद निर्वाण ।
जयति जय... ॥ 5 ॥

भव्य जीव जिनके गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
तीन योग से महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
'विशद' भाव से अर्चा करके, होय जगत कल्याण ।
जयति जय... ॥ 6 ॥

दोहा: **पूजा श्री जिनराज की, ऋद्धि सिद्धि दातार ।**
अतः भाव से जिनचरण, वंदन बारम्बार ॥

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक 108 नाम मंत्र धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा: **शांतिनाथ भगवान का, जपें निरंतर जाप ।**
नाम मंत्र का जाप कर, होवें भव से पार ॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

"सिद्धार्चना"

ज्ञानावरण नाशनं, ज्ञान विशद भाषकं,
नरेन्द्र वृन्द सेवतैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥1॥
दर्शावरण मर्दनम्, लोकालोक भाषकम् ।
प्रफुल्ल फुल्ल पुष्पकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥2॥
विमोह कर्म नाशकं, सौख्य परम् दायकम् ।
गुलाब जाति पुष्पकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥3॥
कर्मान्तराय क्षायकं, अनन्त वीर्य लायकं ।
नवीन पारिजातकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥4॥
कर्म वेदनीय क्षयं, अव्याबाध गुणकरं ।
प्रफुल्ल मालती दलैर्, नमामि सर्व सिद्धये-3 ॥5॥
आयु कर्म क्षायकम, गुणावगाहनं करं ।
धवल कुन्द पुष्पकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥6॥
कर्म नाम क्षय करं, सूक्ष्मत्व गुणाकरम् ।
विकासि पद्म पुष्पकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥7॥
गोत्र कर्म नाशकम्, अगुरुलघु दायकम् ।
कदम्ब पुष्प सद्दकैर्, नमामि सर्व सिद्धये-2 ॥8॥
समस्त कर्म क्षायकं, गुणाष्ट काद्यलंकरं ।
"विशद" सिद्धि दायकं, नमामि सर्व सिद्धये ॥9॥

समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।
दोहा - अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो नमः / ॐ ह्रीं श्रीं मन्तं भगवन्तं कृपाल संतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे..... देशे.....प्रान्ते.....नाम्नि नगरे.....मासानामुक्तमे.....मासे.....शुभ पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं अनर्घ्य पद प्राप्तये समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।

शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।
(शान्तये शान्तिधारा-3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान। बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन। सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव। करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हंदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमावतं भवतु।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

'आशिका लेने का मंत्र'

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

जो मुस्करा कर जिया करते हैं, हँसकर गम पिया करते हैं।
वे इंसान के रूप में देवता हैं जो औरों को सहारा दिया करते हैं।।

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।